खेल | फ़ाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा के लिए आधार

किन्नरी पण्ड्या

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) ऐतिहासिक महत्त्व का दस्तावेज़ है, जो विस्तृत दिशा-निर्देश उपलब्ध कराता है – वे लक्ष्य, शैक्षणिक विचार और शिक्षा के मापदण्ड जिन्हें भारत की स्कूली व्यवस्था को बच्चों की स्कूली शिक्षा के प्रारम्भिक पाँच वर्षों में हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। यह लेख बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, खेल के महत्त्व, खेल के माध्यम से सीखना और 3 से 8 साल के बच्चों के लिए सीखने के लक्ष्यों और मापदण्डों के साथ खेल के रिश्ते पर केन्द्रित है। इन चीज़ों की रूपरेखा पाठ्यचर्या की रूपरेखा के 1, 2 और 4 खण्डों में प्रस्तुत की गई है।

छोटे बच्चे और सीखने की प्रक्रिया

उदाहरण-1 : तीन साल का एक बच्चा कक्षा के किनारे चलती हुई चींटियों की क़तार को देख रहा है। बच्चा अति उत्सुकता के साथ देखता है कि एक बड़ी चींटी एक छोटी चींटी को लादे हुए बाक़ी चींटियों के पीछे-पीछे चली जा रही है। पाँच साल का एक अन्य बच्चा एक छोटा-सा पारदर्शी डिब्बा लेकर आता है, कुछ चींटियों को पकड़कर उसमें रखता है और डिब्बे को फुर्ती से बन्द कर देता है ताकि उन्हें संरक्षित कर उन्हें ग़ौर से देख सके।

उदाहरण-2 : कक्षा-1 की शिक्षिका नियमित रूप से कहानियाँ सुनाती है। बच्चे उसकी भाव-भंगिमाओं को देखते हैं और पूरी दिलचस्पी लेते हुए उसे ध्यान से सुनते हैं - शेर की हुंकार, चूहे की चीं-चीं, गिलहरी की वह आवाज़ जो वह साँप को पास आते देखकर निकालती है। कहानी सुनाए जाने की नियमित दिनचर्या के दौरान कई बच्चे पुस्तक उठाकर ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर एक-दूसरे को सुनाते हैं; कुछ बच्चे ख़ाली समय में जानवरों की कठपुतलियाँ लेकर कहानी को अभिनय में ढालने लगते हैं।

ऊपर के उदाहरणों के आधार पर, हम नीचे लिखे प्रश्न और उनके उत्तर निकालते हैं :

ये उदाहरण छोटे बच्चों के बारे में क्या दर्शाते हैं?

- बच्चे जिज्ञासु होते हैं।
- बच्चे प्रकृति और अपने वातावरण के साथ जुड़ जाते हैं।
- बच्चे चीज़ों को ग़ौर से देखते हैं।
- बच्चे खोजबीन करना पसन्द करते हैं।
- बच्चे अनुकरण करते हैं।
- बच्चे अभिव्यक्त करते हैं।

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के बारे में वे क्या बताते हैं?

- बच्चे अपने वातावरण को ग़ौर-से देखते हैं और उससे सीखते हैं।
- बच्चे सीखने के लिए अपने आस-पास की सामग्री, लोगों, अनुभूतियों और चीज़ों में दिलचस्पी लेते हैं।
- बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए खोजबीन, जाँच-पड़ताल और जोड़-तोड़ करते हैं।

क्या हम इसे सीखने की आनन्ददायक प्रक्रिया कहेंगे?

एक 'प्रेक्षक' के रूप में चीटियों की क़तार को देखता हुआ बच्चा आनन्द और विस्मय महसूस करता है। यह सम्भवत: एक आनन्ददायी अनुभव है जिसके बारे में व्यापक तौर पर यह कहा जा सकता है कि बच्चा खेल और आनन्द के अनुभव में मग्न व तल्लीन होता है।

उदाहरण-2 में, कहानी को दोहराने की क्रिया, ख़ाली समय में पढ़ना, एक-दूसरे को पढ़कर सुनाना, कहानी के चरित्रों का चित्रांकन और अभिनय करना – सक्रिय रूप से सीखने के ये सारे अनुभव अपनी प्रकृति में आनन्द से भरे भी लगते हैं। बच्चों को यह सब करने में मज़ा आता है और यह वे अपने मन से करते हैं।

दोनों ही उदाहरणों में खेलना और सीखना दो भिन्न चीज़ें नहीं हैं। बच्चों के अनुभव में वे अखण्ड रूप से एक साथ चलती प्रक्रियाएँ हैं।

फ़ाउंडेशनल स्टेज में सीखना और सिखाना

हम दो स्थितियों पर नज़र डालते हैं।

स्थिति क : एक कक्षा के 25 बच्चे छोटे-छोटे समूहों में कक्षा के विभिन्न हिस्सों में बैठे काम कर रहे हैं। एक समूह कहानियाँ पढ़ रहा है, एक समूह ब्लॉक, मनकों और जोड़-तोड़ वाली चीज़ों के साथ खेल रहा है, तीसरे समूह के बच्चे रनिंग ब्लैकबोर्ड पर आकृतियाँ बना रहे हैं और चौथा समूह डॉक्टर-डॉक्टर खेल रहा है। शिक्षिका एक समूह से दूसरे समूह के पास

जाती है, पढ़ रहे समूह से कहानी-विशेष के बारे में सवाल पूछती है; मनकों से खेल रहे समूह के पास जाकर मनकों का एक पैटर्न तैयार करती है; रनिंग ब्लैकबोर्ड पर बच्चों द्वारा किए गए रेखांकनों को नाम देती है और डॉक्टर-डॉक्टर खेल रहे समूह की दवा-विक्रेता बन जाती है।

स्थिति ख : 25 विद्यार्थियों की एक और कक्षा जिसमें वे कॉपियाँ और पेन्सिलें लेकर बेंचों पर बैठे हुए हैं और अपनी किताबों पर नज़र गढ़ाए हुए समूचे पीरियड के दौरान कॉपी पर 1 से 100 तक संख्या उतारने की कोशिश कर रहे हैं। शिक्षिका कक्षा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाती हुई यह सुनिश्चित कर रही है कि कहीं कोई आवाज़ न हो। अगर किसी बच्चे की लिखावट पढ़ने में नहीं आती तो वह उसे रबर से मिटा देती है और बच्चे से फिर-से लिखने को कहती है। यह तक़रीबन पूरे दिन जारी रहने वाला सिलसिला है – चुपचाप कई-कई बार ब्लैकबोर्ड को देखकर लिखना सिवा उन 15 और 30 मिनट के मध्यान्तरों के जब बच्चे यहाँ-वहाँ जाकर अपनी रुचि का काम कर सकते हैं।

दोनों कक्षाओं में 5 से 6 साल की उम्र के बच्चे हैं जो समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए हैं।

इन दोनों स्थितियों में कौन-सी बात *समान* है?

1. दोनों कक्षाओं के भीतर सीखने-सिखाने की स्थितियाँ हैं।
2. दोनों ही स्थितियों में प्रतिबद्ध और चिन्ता करने वाले शिक्षक हैं जिनकी दिलचस्पी बच्चों के सीखने और पाठ्यक्रम को पूरा करने में है।
3. दोनों ही कक्षाओं में समान आयु-वर्ग के बच्चे हैं जिनके विकास के समान लक्षण हैं।

इन दोनों स्थितियों में *भिन्न* क्या है?

1. बच्चों की भागीदारी, स्वतंत्रता और नियन्त्रण :
   क. *स्थिति क* शोर से युक्त होगी जिसमें विद्यार्थी हलचल कर रहे होंगे, आपस में बतिया रहे होंगे और खिलौनों को आपस में बाँट रहे होंगे।
   ख. *स्थिति ख* में ख़ामोशी होगी और अनुशासन का स्पष्ट बोध होगा।
2. चयन और विद्यार्थियों की भूमिका :
   क. *स्थिति क* में बच्चे चल-फिर रहे हैं, बातचीत कर रहे हैं और नई चीज़ें आज़माकर देख रहे हैं और शिक्षिका बच्चों के चुने हुए काम में भागीदारी कर रही है। यहाँ शिक्षण सक्रिय अन्वेषण प्रतीत होता है।
   ख. *स्थिति ख* में एक वयस्क पढ़ा रहा है, बच्चे बैठे हुए हैं और ब्लैकबोर्ड से कॉपी पर उतारते हुए सीख रहे हैं, अभ्यास कर रहे हैं और शिक्षिका द्वारा उनके लिए तैयार किए गए कार्यों को दोहरा रहे हैं। यहाँ पर शिक्षिका के निर्देशों का पालन करना और उनके दिए हुए कार्य को पूरा करना प्रमुख उद्देश्य प्रतीत होते हैं।
3. आदान-प्रदान :
   1. *स्थिति क* में आदान-प्रदान उच्च स्तर पर है – आदान-प्रदान बच्चों के बीच, बच्चों और शिक्षिका के बीच और बच्चों और उनके वातावरण (खिलौनों और अन्य सामग्री) के बीच। यहाँ वातावरण को तीसरे शिक्षक के रूप में देखा गया है।
   2. *स्थिति ख* में बच्चों के बीच न्यूनतम आदान-प्रदान है; वह किन्हीं अवसरों पर बच्चों और शिक्षिका के बीच उच्च स्तर का हो सकता है; और बच्चों और खेल की सामग्री के बीच वह किसी गतिविधि-विशेष और काम को पूरा करने तक सीमित हो सकता है। मसलन, ऊपर के उदाहरण में बच्चे बेंच, कॉपी, पैन और ब्लैकबोर्ड के साथ सबसे ज़्यादा अन्तर्क्रिया करते हैं।

आख़िरी बात कि, *स्थिति क* में विस्मय और आनन्द प्रतीत होता है, जो ऐसे पहलू हैं जिनका *स्थिति ख* में पूरी तरह से अभाव है।

क्या हम *स्थिति क* को उस कोटि में रख सकते हैं जो सक्रिय रूप से सीखने के और इसीलिए समग्र विकास के, अधिक अवसर उपलब्ध कराएगी? सीखने के वातावरण में आनन्द का होना, उस निष्क्रिय भागीदारी और नक़ल तैयार करने के मुक़ाबले सीखने की प्रभावशाली प्रक्रिया में अधिक योगदान करता है, जिसके पास दिखाने के लिए बच्चों द्वारा किया गया ढेर सारा काम हो सकता है, लेकिन जिसका नतीजा वास्तविक शिक्षा के रूप में सामने नहीं आता – उस शिक्षा के रूप में जो बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया को समझने की क़ाबिलियत प्रदान करती है।

यह सवाल तब भी बचा रहता है : *स्थिति ख* में शिक्षिका सीखने के उसी अनुभव को आनन्दपूर्ण कैसे बना सकती है?

शिक्षण के रूप में खेल और आनन्द का माहौल

एनसीएफ़-एफ़एस कहता है कि चयन, आनन्द और विस्मय *खेल* की विशेषताएँ होती हैं। विकास के तमाम क्षेत्रों में सीखने को सम्भव बनाने के लिए सीखने के वातावरण का आनन्द और खेल भरा होना ज़रूरी है। खेलते वक़्त बच्चे काफ़ी सक्रिय होते हैं : वे दुनिया को समझने की कोशिश में चीज़ों को व्यवस्थित करते हैं, योजना बनाते हैं, सोच-समझकर चीज़ों को नियंत्रित करते हैं, समझौता/ मोलभाव करते हैं, खोजबीन करते

हैं, जाँच-पड़ताल करते हैं और सृजन करते हैं। (एनसीएफ़-एफ़एस पेज-40)

सीखने की यह सक्रिय प्रक्रिया बच्चों को समृद्ध ऐन्द्रिय, संज्ञानात्मक, भाषिक, शारीरिक और गतिशीलता के अनुभवों के साथ-साथ लोगों और आस-पास की दुनिया के साथ आदान-प्रदान के अवसर उपलब्ध कराती है।

एनसीएफ़-एफ़एस आगे यह भी कहता है कि इस स्टेज में सीखना एक सक्रिय और संवादात्मक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे खेल के तथा अन्य बच्चों व अधिक अनुभवी लोगों के साथ बातचीत के ज़रिए सीखते हैं। बच्चे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से मशगूल रहते हैं और वे अपने संवेदन और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी को समायोजित और उपयोग करते हैं। बच्चों का खेलना और बिना किसी हिचक के मज़े से काम करना, इन दोनों को दूसरों के साथ सक्रिय भागीदारी के अनुभव देते हुए पोषित और मज़बूत किया जा सकता है। साथ ही प्राकृतिक व वास्तविक दुनिया की ऐसी सामग्री जो सीखने, कल्पना करने, रचनात्मकता, नवाचार तथा विविध और अनूठे तरीक़ों से समस्या समाधान की क्षमता की उद्दीप्त करती है और बेहतर भी करती है, वह भी इन्हें पोषित और मज़बूत करती है। (पेज-39)

यह दस्तावेज़, खेल की एहमियत के इस खण्ड में आगे कई तरह के खेलों की और इस बात की रूपरेखाएँ प्रस्तुत करता है कि मुक्त खेल से लेकर मार्गदर्शित और संरचित खेल तथा नियम-आधारित खेलों के बीच नियंत्रण और संरचना का स्तर किस तरह बदलता जाता है। इसके अतिरिक्त, यह कई खेलों के प्रकारों के उदाहरण देता है जो उन विकासपरक पहलुओं पर आधारित हैं जिन्हें खेल का वह प्रकार प्रोत्साहित करता है। *(तालिका-1 और 2)*

तालिका-1 : संरचना और नियंत्रण पर आधारित खेल के प्रकार।

	मुक्त खेल	**मार्गदर्शित खेल**	**संरचित खेल**
भूमिकाएँ	बच्चा नेतृत्वकर्ता बच्चे द्वारा निर्देशित	बच्चा नेतृत्वकर्ता शिक्षक मददगार की भूमिका में	शिक्षक नेतृत्वकर्ता बच्चों की सक्रिय भागीदारी
बच्चे क्या करते हैं?	खेल के सभी पहलुओं को लेकर बच्चे निर्णय लेते हैं – क्या खेलना है?, कैसे खेलना है? कितनी देर तक खेलना है, किसके साथ खेलना है?	बच्चे योजना बनाते हैं और ख़ुद ही खेल खेलते हैं, वैसे ही जैसे कि वे मुक्त खेल में करते हैं।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं, नियमों का अनुसरण करते हैं और शिक्षकों द्वारा सोची गई गतिविधियों और खेलों में भागीदारी करते हैं।
शिक्षक क्या करते हैं?	शिक्षक कक्षा में एक मज़ेदार खेल का माहौल बनाते हैं, बच्चों को ध्यानपूर्वक देखते हैं और जब बच्चे मदद के लिए कहते हैं तो उनकी सहायता करते हैं।	शिक्षक मदद करते हैं और सक्रिय रूप से खेल को आगे बढ़ाते हैं। बच्चे जो अलग-अलग टास्क कर रहे हैं उनमें शिक्षक उनको मार्गदर्शन देते हैं, उनसे प्रश्न पूछते हैं, बच्चों के साथ खेलते हैं ताकि वे सीखने के ख़ास प्रतिफलों को हासिल कर सकें।	शिक्षक सीखने के क्रम में आने वाली दक्षताओं को बढ़ाने के लिए विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सोच-समझकर गतिविधियों और खेलों की योजना बनाते हैं। भाषा और गणित के खेल, प्रकृति के साथ सैर, गीत, कविताएँ आदि सभी रोज़ किए जाते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 1.4.2. खेल के ज़रिए सीखना। तालिका 1.4 ए. पेज-42

ये तीन तरह के खेल – मुक्त खेल, मार्गदर्शित खेल, संरचित खेल – शिक्षक द्वारा नियंत्रण और योजना के उत्तरोत्तर बढ़ते स्तरों को और बच्चों के चयन के उत्तरोत्तर घटते हुए स्तरों को दर्शाते हैं। अक्सर, मार्गदर्शित खेल में, बच्चे गतिविधि की शुरुआत करते हैं (जैसा कि उदाहरण-1 और 2 में तथा स्थिति **क** में है) और शिक्षक इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार तथा सुगमकर्ता बन जाता है।

यह दस्तावेज़ खेल की एक और कोटि निर्धारित करता है जो संलग्नता के प्रकार पर आधारित है – यह भूमिकाओं की कल्पना है, जोड़-तोड़ के सहारे वस्तुओं की छानबीन है या दौड़ने, कूदने, सन्तुलन बनाने आदि का शारीरिक संवेग है? बच्चे की सीखने की और विकासपरक चारित्रिकता को केन्द्र में रखने की पाठ्यक्रम की भूमिका बच्चों को लोगों के साथ घुलने-मिलने, कुछ गढ़ने, पड़ताल करने और अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध कराएगी – जो कि बच्चे के स्वाभाविक संवेग हैं (ड्यूई, 1900, पेज 43-44) – इसमें ज़्यादातर बातें ऐसी हैं जिनकी गुंजाइश सीखने का आनन्ददायक वातावरण उपलब्ध कराएगी।

तालिका-2 : खेल के प्रकार।

	खेल के प्रकार	उदाहरण
1	नाट्य खेल/ फ़न्तासी खेल	कहानी को नाट्य रूप देने के लिए, घोड़े को दर्शाने के लिए एक छोटी छड़ी का उपयोग करें। परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और डॉक्टरों जैसे अभिनय करना। अपने पसन्दीदा चरित्र का नाट्य रूपान्तर करना जैसे झाँसी की रानी, रानी चेनम्मा, छोटा भीम, शक्तिमान।
2	खोजबीन खेल	जोड़ो, तोड़ो, फिर जोड़ो – वस्तुओं के भागों को तितर-बितर करके उन्हें फिर से जोड़ना (उदाहरण के लिए, घड़ी, टॉयलेट फ़्लश, तीन पहिए वाली साइकिल) । उपकरणों के साथ प्रयोग (उदाहरण : चुम्बक, प्रिज़्म, आवर्धक लैंस)। चना, राजमा को मिलाना और फिर अलग छाँटना। रेत का खेल, पानी का खेल।
3	पर्यावरण/ छोटी दुनिया के खेल	लघु जानवरों, फ़र्नीचर, किचन सैट, डॉक्टर सैट आदि का उपयोग करते हुए वास्तविक दुनिया को फिर से बनाना और इसके साथ जुड़ना। प्रकृति की सैर – पेड़ों, पौधों, कीड़ों, पक्षियों, जानवरों, ध्वनियों, रंगों की पहचान करना।
4	शारीरिक खेल	संगीत, शारीरिक हलचल, नाटक, आउटडोर खेल, सन्तुलन, खेलों के ज़रिए शरीर की पड़ताल।
5	नियमों के साथ खेल	हॉपस्कॉच (कित-कित, स्टापू, लँगड़ी, टैग, साँप-सीढ़ी, चौपड़, लट्टू, बुगुरी, कंचे, कोकला, चपकी, पिट्ठू, पल्लनगुझी)।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 1.4.2. खेल के ज़रिए सीखना। तालिका 1.4 बी. पेज-43

सभी बच्चों के लिए सीखने का आनन्ददायक भरा वातावरण सुनिश्चित करते हुए, पाठ्यक्रम और सीखने के स्तरों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम और रोज़मर्रा की गतिविधियों की योजना बनाना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, ख़ासतौर से उन बड़ी कक्षाओं में जहाँ विद्यार्थी-शिक्षक का अनुपात विषम होता है।

जो चीज़ें बच्चों के सीखने के अभीष्ट स्तर को सम्भव बनाती हैं, वे हैं बच्चों, उनके परिप्रेक्ष्य और उनकी आयु से सम्बन्धित विकासपरक प्रवृत्तियों के बारे में शिक्षक की समझ, समग्र विकास पर केन्द्रित पाठ्यचर्या सम्बन्धी लक्ष्य, सीखने के मापदण्ड, समय को नियोजित करने की युक्तियाँ और पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनुभवों की योजनाएँ। प्री-स्कूल और आँगनवाड़ी के बहुत-से कार्यक्रमों ने दर्शाया है कि पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण निष्पादन को सुनिश्चित करते हुए सीखने का एक आनन्ददायक भरा वातावरण तैयार करना और उसे बनाए रखना सम्भव है।

शिक्षक की भूमिका

छोटे बच्चों के शिक्षक के लिए कई तरह की तैयारियों की ज़रूरत होती है। उनकी भूमिका में पाठ्यक्रम के कार्यक्रम के अनेक पहलुओं की योजना बनाना और उन्हें आयोजित करना शामिल है, ताकि कार्यक्रम के लक्ष्यों को पूर्ण रूप से हासिल किया जा सके।

1. *आनन्ददायक सीखने में विश्वास* : पहली ज़रूरत होगी बच्चों को लेकर शिक्षक की अपनी समझ – उनकी विशेषताएँ और पूछने, पड़ताल करने, बात करने, छानबीन करने और समझने की उनकी प्रकृति; और सीखने की उनकी ज़रूरतों में फ़र्क़ की समझ। उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं सीखने के सिद्धान्त, खेल से भरी सीखने की सम्भावनाओं और समग्र शिक्षा के लिए वातावरण रचने में गहरा विश्वास। उतना ही महत्त्वपूर्ण है खेल-आधारित सीखने के महत्त्व को देखते हुए अभिभावकों को उससे जोड़ना।
2. *स्रोत के रूप में बच्चे* : बच्चों की सूझें, मन:स्थितियाँ, दिनचर्या, रुचियाँ, सवाल और उनकी ऊर्जा तथा जिज्ञासा अक्सर उनके साथ शिक्षक की संलग्नता के लिए उत्कृष्ट प्रस्थान-बिन्दु उपलब्ध कराते हैं। बच्चों की अभिव्यक्ति और रुचियों को सीखने के लिए आवश्यक वातावरण रचने के लिए स्रोतों के रूप में सक्रिय रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
3. *वातावरण की रचना* : सुन्दर ढंग से तैयार किए गए सीखने के वातावरण तीसरे शिक्षक की भूमिका निभाते हैं। ऐसे वातावरण की रचना में शामिल हैं : अन्दर और बाहर के उन विभिन्न स्थलों का उपयोग और प्रबन्धन जिनमें बच्चे संलग्न रहते हैं; खेल की सामग्री, रनिंग ब्लैकबोर्ड प्रदान करना और अभिव्यक्ति तथा पढ़ने, जोड़-तोड़ वाले सामानों

व विभिन्न रूपों में बरते जा सकने वाले खिलौनों को इस्तेमाल करने के स्थान प्रदान करना, रेत के ढेर में सामग्री और डॉल कार्नर आदि का बन्दोबस्त करना और ऐसी दिनचर्या तथा लय जिसका बच्चे अनुसरण कर सकें।

4. *इस वातावरण को बनाए रखना* : खेल-आधारित सीखने के महत्त्व को स्थापित करने के लिए, शिक्षक को भागीदारों का एक ताना-बाना खड़ा करने की ज़रूरत होगी, जिसमें बच्चे, अभिभावक और वृहत समुदाय शामिल हों। इसमें खेलने और सीखने के आनन्ददायक वातावरण में सक्रिय संलग्नता के समय की तुलना में लेखन से कॉपियों को भरने में बिताए गए समय के फ़ायदों का पुनरीक्षण शामिल होगा।

क्या इस स्टेज के अन्त तक खेल-आधारित शिक्षण विधि का इस्तेमाल करते हुए तमाम क्षेत्रों के सीखने के स्तरों तथा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करना मुमकिन होगा?

एनसीएफ़-एफ़एस विकास के तमाम क्षेत्रों के लिए पाठ्यक्रम-सम्बन्धी प्रमुख लक्ष्यों और दक्षताओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। वह फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल किए जाने वाले सीखने के स्तरों की रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है। वह फ़ाउंडेशनल स्टेज के दौरान बच्चों द्वारा हासिल किए जाने वाले अनेक विकासपरक पहलुओं को भी उजागर करता है।

इस स्टेज में सीखने के भाषिक और साक्षरतापरक स्तरों में मौखिक भाषा से आगे बढ़कर विकासमान पठन और लेखन तथा औपचारिक अक्षर-ज्ञान तक बढ़त का एक सिलसिला दिखाई देता है। इसी तरह, गणित के आरम्भिक स्तरों में तमाम आरम्भिक और विकासमान गणितीय अवधारणाओं और उसके बाद आठ वर्ष की उम्र तक संख्याओं की समझ और फ़ाउंडेशनल अंकगणित व ज्यामिती के लिए एक विकासपरक शृंखला दिखाई देती है।

निष्कर्ष

'सुनियोजित शिक्षण' और खेल-आधारित सीखने के अवसरों के बीच समय और सन्तुलन के निर्धारण के सन्दर्भ में एनसीएफ़-एफ़एस स्पष्ट तौर पर कहता है :

> इस स्तर पर बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं जिसमें गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला और प्रोत्साहित करने वाले अनुभव शामिल होते हैं। इन सभी गतिविधियों और अनुभवों को इस तरह से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है कि बच्चे सीखने में मशगूल होने के साथ-साथ भावनात्मक और मानसिक रूप से प्रेरित भी होते रहें। खेल के इस व्यापक विचार के तहत, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बच्चे भी अवलोकन करके, चीज़ों को ख़ुद करके, सुनकर, पढ़कर, बोलकर, लिखकर, सोचकर और अभ्यास करके सीखते हैं। वे नई अवधारणाओं को सीखते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं और इस नए ज्ञान को अपने मौजूदा ज्ञान से जोड़ते हैं। स्पष्ट और व्यवस्थित शिक्षण, कुछ अभ्यास और अनुप्रयोग आवश्यक हैं, ख़ासकर जब बच्चे पढ़ना-लिखना और गणित की शुरुआत करते हैं। हालाँकि, यह सब, बच्चों के सकारात्मक जुड़ाव की बुनियादी ज़रूरत से सम्बद्ध होना चाहिए साथ ही इसमें मज़ा और खेल के तत्व शामिल हों।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1.4.3. बच्चों को खेल में मशगूल करना। पेज- 45

References

Dewey, J. (1990/1900). The School and Society. Chicago, IL: University of Chicago Press

National Curriculum Framework for the Foundational Stage. National Council of Educational Research and Training (NCERT). 2022

किन्नरी पण्ड्या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में बाल विकास, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) और शिक्षक प्रशिक्षण पर विभिन्न कोर्स पढ़ाती हैं। वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के ईसीई प्रयासों की संकल्पना और उनके क्रियान्वयन में शामिल रही हैं, जैसे एमए शिक्षा (अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय) में विशेषज्ञता पाठ्यक्रम प्रदान करना और तेलंगाना, कर्नाटक, पुडुचेरी तथा मध्य प्रदेश में फ़ाउंडेशन की फील्ड पहलें। उन्होंने 2006 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन की सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार के प्रयत्नों से जुड़ी कई पहलों में योगदान दिया है। वे *टीचिंग द यंग : द अर्ली चाइल्डहुड प्रॉफेशन इन इंडिया* की सह-सम्पादक हैं। उनसे *kinnari@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय